Historicity Research Journal
ISSN : 2393-8900

Impact Factor : 1.4152 (UIF)
Volume - 3 | Issue - 3 | November – 2016

द:खन में किले का महत्त्व

(विशेष संदर्भ - शिवाजी किला प्रशासन)

डॉ. पठाण झेड.ए.
सहयोगी प्राध्यापक तथा विभागप्रमुख,कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,बदनापूर, जि. जालना.

प्रस्तावना:-

भारत वर्ष में किलो का असाधारण महत्त्व है। प्राचीन काल से लेकर अंग्रेजो के प्रशासन काल तक यह किले उनके राज्य तथा प्रशासन का महत्त्वपूर्ण अंग रहे है। संपूर्ण भारत के किला निर्माण में स्थानिक प्रशासन तथा समय समय पर नवनिर्माण राजाओने योगदान दिया है। द:खन में भी कीला प्रशासन अतिमहत्त्व रखता है। कुछ कीले तो बनाए गये है तो कुछ पहलेसे ही मौजूद थे। तो कभी अपने राज्य (साम्राज्य) के खातीर कुछ राजाओंने उसे मरम्मत करवा कर अपने शासन का मुख्य केंद्र बनवाया था। द:खन के किले तीन प्रकार के हैं, जिसमें प्रथम पहाडी पर स्थित तथा दुर्गपर दुसरे जमीन पर बनवाये गये और तिसरे समुंदर के तट पर होते है, जिसका महत्त्व विदेशनीति तथा व्यापार से था।[१]

अ) दुर्ग किले (पहाडी किले) और उनका प्रशासन :

द:खन भारत में प्राचीन काल में राष्ट्रकुट, यादव, चोल, चेर पांड्ये तथा सातवाहन काल में पहाडी की चोटी पर बहुत सारे किले बनाये गये थे। महाराष्ट्र के जुन्नर का शिवनेरी किल्ला यादव काल से प्राचीन दिखाई पडता है। इसी कीले पर सन १६३० मे छत्रपती शिवाजी महाराज का जन्म हुआ।[२] यादव काल में दौलताबाद के देवगिरी किले का निर्माण हुआ उसे कृष्णदेव राय ने बनवाया था।[३] सिंहगड, लोहगड जैसे अतुट किले सह्याद्री के चोटीयोंपर पाये जाते है। रायगड तथा उसके निकटवर्ती कीले का निर्माण भी इसी समय हुआ था। इन सभी कीलो पर शिवाजी महाराज ने अपने स्वराज्य की नींव रखी थी। इनके अलावा औरंगाबाद, अंबड, पैठण, भोकरदन, बीड, धारूर, नलदूर्ग, औसा, परंडा और कही स्थानों पर छोटे छोटे समुचित कीले बनवाने का प्रयास किया गया था। जिसका जिर्ण शिर्ण अस्तित्व आज भी इसी इलाके में दिखाई पडता है। यादव काल के बाद बहामनी सलतनतो ने उसे अपने राज्य में शामिल किया इसी दौरान मुस्लिम सुफी संतो का कारवाँ द:खन में चलता रहा। इन सभी संतोने, इन्सानियत की नींव रखी। उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी कब्रे, तथा दर्गा आज भी कही कीलो पर स्थित है। सिंहगड किले का इसामी नामक मुस्लिम कवि के खंडकाव्य का वर्णन सन १३५० में प्राप्त हुआ। उससे पहले २५ वर्ष दिल्ली सुलतान महमद तुघलक ने कोंडाणा किला सर किया तब नायनाक नामक कोली जाते के किल्लेदार से यह किला उन्हे मिला था। बाद में सन १४८२ मे निजामशहा मलिक अहेमद ने इसे जीत लिया था। शिवाजी महाराजने इसे तीन बार हासिल किया, जैसे सन १६७० मे तान्हाजी मालुसरेने अचानक हमला करके उदयभान और राजपूत सैन्यो को वहा से निकाला और वहापर वीरगति प्राप्त की, इसलिए शिवाजी महाराजने उसे सिंहगड नामकरण दे दिया।[४] इन पहाडी तथा दुर्ग कीले के बारे में सर जादूनाथ सरकार कहते है, ''शिवाजी के सबसे ज्यादा पहाडी तथा दुर्ग किले थे। कीले के निकट के प्रदेश पर उनका शासन चलता था। किले के आसपास के भूप्रदेशपर नियंत्रण रखना, तथा शत्रू पक्ष की योजनाएँ तथा उनके हमलो की आशंकाए पर नजर रखना यह सारी बातें यहीं से हुआ करती थी। इसलिए नये कीले बनवाया तथा पुराणे कीले की महरहमत करना इसके लिए एक स्वतंत्र विभाग कार्यरत था। हर कीले पर जादा लष्कर की तुकडियाँ तैनात हुआ करती थी। यह सभी किले सह्याद्री के चोटियों में पाये जाते है।''[५] जैसे सातारा किलापर जब औरंगजेबने हमला कर दिया तब मराठोंने स्वयं को सुरक्षित रखकर शत्रूपर धावा बोल दिया अंतिम समय मुघलों के हाथ यह किला प्राप्त हुआ लेकिन कीले में बाकी कुछ न था। बाद में राजाराम ने उसे जित लिया। तोरणागड, रायगड किले तो शिवाजी के बचपण के पराक्रमो की गाथा सुनाते खडे है।[६] बाजीप्रभूने रांगणा कीला अखरी साँसतक बचा कर वीरगति प्राप्त की, उनके इस बलिदान से शिवाजीने उसे पावनखिंड नाम दे दिया।[७] इसके अलावा पुरंदर, रोहिडा, सिंहगड, पन्हाळा, साल्लेरी, माहुली, प्रतापगड जो अफजलखान के वध से प्रसिद्ध हुआ।[८] ऐसी कई किले थे जो पहाडी की चोटी पर स्थित थे।

पहाडी किला प्रशासन व्यवस्था :

हर कीले पर एक हवालदार रखा गया था। उसे मदत कार्य के लिए छोटे छोटे सिपाई, मदतगार नियुक्त किये गये थे। किला तथा उसके निकट के प्रदेश पर नियंत्रण रखना उसका कार्य था। देशस्थ, कोकणस्थ तथा कऱ्हाडे इन तीन ब्राह्मणवर्गों मे से कोई एक सुभेदार रहता था। और साथ में एक अंमलदार हुआ करता था। कारखानिस इस पर प्रभू जाती का सुभेदार रहता था। किले की मरहमत के लिए स्वतंत्र

विभाग की योजना थी। शिबंदी नामक एक विभाग था जो सैनिकों का रोगनिदान तथा इलाज कराता था। लढाई में जख्मी हुवे सैनिक के प्रति आदर भाव से उसका उपचार चलता था। यह ब्राह्मण सुभेदार दिवाणी व मुलकी काम भी देखता था, प्रभू जाती के कारखानीस नामक सुभेदार के पास लष्कर का खाना-पीना, चंदी वैरण (घास), दारू गोला तथा लढाई के जरूरी सामान की जानकारी रहती थी। इस तरह तीनो जाती की लोग एक ही जगह पर एक साथ मिलकर काम करते थे। यही विशेषता शिवाजी महाराज के किला प्रशासन की थी। किले के निकट जंगल तथा झाडियाँ, पहाडी इलाके का फायदा खुद के संरक्षण के लिए होता था। जिसमें रामोशी जाती के लोग आगे थे। वह लोग रात्री तथा दिनभर किले और निकटवर्ती प्रदेश पर नजर रखा करते थे। हर किले की महत्त्वता को देखकर वहा पर लष्कर हुआ करता था। हर एक नाईक के पास ९ सिपाई हुवा करते उनके पास बंदुके, तलवार, छोटे-छोटे भाले, पट्टे, छुरे हुआ करते थे। नौकरो को उनके कार्य के अनुसार वेतन दिया जाता था। हवालदार को हर महिने १२५ होन (५०० रूपये) और नोकरो को १० होन (४० रूपये) प्रतिमाह वेतन दिया जाता था।[९]

ब) मैदानी किले तथा जमीन पर किले और उनका प्रशासन :

मैदानी किले की संख्या महाराष्ट्र में कम है। लेकीन जो भी है उनका शिवाजी काल मे इतना प्रभाव नही रहा। मराठो ने हमेशा पहाडी किलो का सहारा लेकर अपना राज्य बढाया था। क्योंकि पहाडी प्रदेश में शत्रूका पहुचना बहुत मुश्किल था। मुश्किलो के समय मराठे खुद को पहाडी किलो में संरक्षित पाते थे। ब्रिटिश राज्यव्यवस्था के अनुसार जिस तरह तालुका तहसील की पद्धती दृढ है उसी तरह मैदानी जमीन प्रदेश के महाल और प्रांत ऐसे दो केंद्र माने जाते थे। एक महाल की दरसाली जमाबंदी सरासरी ७५ हजार से १२६ हजार तक रहती थी। दो अगर तीन महल मिलाकर एक सुभा होता था। उनके उपर रक्षण करनेवाले सुभेदार रहते थे। उनका वेतन हर साल ४०० होन याने आज के अनुसार ४ हजार हुआ करता था। मुघल काल में जमाबंदी का काम ग्राम का पाटील, कुलकर्णी तथ देशमुख, देशपांडे देखा करते थे। वतनदारी पहले से ही मौजुद थी। जमाबंदी की व्यवस्था शिवाजी महाराज ने उनके हाथो निकवालकर सुभेदारो को अपने सुभे में (प्रांत) खुद करने का हुकुम महाराज ने दिया था। दो या तीन ग्राम को मिलाकर एक कमाविसदार नामक कारकून रखा गया था। जो जो जमाबंदी का काम करता रहता था। इस तरह की प्रशासन व्यवस्था की नीव शिवाजी महाराज ने रखी थी।[१०]

क) सागरी किले तथा उनका प्रशासन :

सागरी कीलो का महत्त्व द:खनी भारत के व्यापार तथा परराष्ट्रनीति के लिए महत्त्वपूर्ण है। अरब सागर से विदेशियों का व्यापार चलता था। जिसमें अंग्रेज, डच, पोर्तुगाल तथा हबशी थे। यह कंपनियों बिना किसी के रोकटौक के अपना कारोबार बडा रही थी। उनपर नियंत्रण प्राप्त करना जरूरी था। इसलिए शिवाजी महाराज ने आरमार की रचना की और कोकण पट्टीमें विजयदुर्ग, सिंधूदुर्ग, सुवर्णदुर्ग, रत्नागिरी, खांदेशी, उंदेरी, पद्म दुर्ग जैसे किले बनाये। कोकण में स्थित कोली जाती के मुस्लिम जो दर्यावर्दी हुआ करते थे। उनको इकठा करके एक विशाल नौसेना बनायी। इन सभी का मध्य केंद्र विजयदुर्ग किला था। और मुख्य केंद्र कुलाबा (अलिबाग) राजधानी बनवाई थी। सभी किले कल्याण, भिवंडी, पनवेल, वेगुर्ले, मालवण रत्नागिरी तथा सिंधूदुर्ग इनके निकट पाये जाते है। सागरी आरमार के लिए जहाज बनवाने का कार्य (कारखाना) शिवाजी महाराजने शुरू किया था। युद्ध पोत अपना काम नही कर सकते जब तक की निकट ही उनके लिए सुरक्षित अड्डे नही, जहा उनकी मरम्मत हो सके, सामान मिल सके और जहाँ कठोर मौसम मे वे शरण पा सके। अपने युद्ध पोत तथा व्यापारी जलयानो को बढोतरी के साथ साथ पश्चिम तट पर ऐसे उनके नौ-गड स्थापित करके शिवाजी महाराज ने अपने उत्कृष्ठ नेतृत्त्व का प्रमाण दिया था।[११]

शिवाजी महाराज के समस्त कीले चाहे वे भितरी हो अथवा समुद्री सबी एक ही नमुने के बन थे। स्थान प्राय: वह चुना जाता है जहाँ दन्डी (खडी चट्टान) अथवा संलग्नदिवार हो जो आधी मे अधिक समुद्र से घिरी होता है जिस पर प्रति रक्षा के हेतु अनेक बुर्ज बना दिये जाते थे। किले में प्राय: एकही फाटक होता है, और यह आमतौर पर सबसे अधिक मजबूत भाग होता है। जिस पर अकसर एक मिनार बनी होती है। दो दिवारो के बिच में भितरी फाटक के लिए एक तंग घुमावदार मार्ग होता है, जो मुख्य दिवार के अग्रभाग के सामने होता है, उनकी प्रति रक्षा दो बुर्जो द्वारा होती है। जो मार्ग की रक्षा करते है। मुख्य दिवार के भितर प्राय: एक भितरी किला होता था। बाला किला और इनके चारो ओर-अनेक भवन बने होते थे जिनमें सैनिक रहते थे। और बारूदखाना, तालाब, कुएँ भी यही होते थे। बडे किलो मे संलग्न एक नगर या पेठा होता था जो उस पहाडी की जलहट्टी में संगुच्छित था जिस पर किला बना होता था।[१२] विजयदुर्ग जिसे आम लोग घेरिया कहते थे और जिसका शिवाजी महाराज ने पुनर्निमाण कराया। जो महल भी है, यह एक सुंदर नदी की चौडी एच्युएरी में निकली हुई संलग्न भिती पर बना है। और देश में भितरी भाग से उनका संचार एक खाई द्वारा बंद कर दिया गया था। जो इस भिती के आरपार जाती थी। दिवारो के सबसे बडे विस्तार पर समुद्र है और बाहरी सुरक्षा के भाग आगे तट तक विस्तृत है। दिवारे बहुत अधिक मोटी और उंची है, इस उतराई के घाट मे अतिशक्तीशाली प्रतिरक्षा की तीन पक्तियाँ दिखाई देती है। एक और मुख्य विचार के सर्वोच्च भाग से एक बडी मिनार दिखाई पडती है। वहासे दृश्य बहुत सुंदर और विविधता पूर्ण दिखाई देते है।[१३]

सारांश रूप मे द:खन मे किला प्रशासन को नया आयामी रूप देने का काम छत्रपती शिवाजी महाराज ने दिया था। उनके पहाडी और समुद्र तटिय किले बहुत ही मजबूत थे। उसका निर्माण शिवाजी ने किया था। सभी तरह के २४० किले महाराज के राज्य मे थे। उसीसे

महाराज का प्रशासन चलता था। कृष्णाजी सभासद कहते है, एकंदर गड बेरीज : ५० प्रथम, १११ नवे राजियानी बसविले, ७९ कर्नाटक प्रांतीचे एकूण २४० जमा.[१४]

याने के पहले से ही ५० किले थे बाद में १११ किले राजा ने बनवाये तथा ७९ किले कर्नाटक प्रांत से मिले ऐसे कुल मिलाकर २४० किले महाराज के स्वराज्य में थे।

इस किले प्रशासन पर शिवाजी महाराज का स्वराज्य टिका हुआ था। आज्ञापत्र में इसका वर्णन इस तरह है - संपूर्ण राज्याचे सार ते दुर्ग, दुर्ग नसता मोकळा प्रदेश परचक्र येताच निराश्रय, प्रजा भंग होवून देश उद्धवस्त होतो. देश उद्धवस्त झाल्यावरी राज्य ऐसे कोणास म्हणावे... हे राज्य तरी तीर्थरूप थोरले कैलासवासी स्वामीनी गडावरूनच निर्माण केले.[१५]

इस तरह छत्रपती शिवाजी महाराज के युग में किला प्रशासन का महत्त्व दिखाई देता है।

इस प्रकार द:खन में प्रशासन व्यवस्था के लिए पहाडी किले, मैदानी कीले, जमीन पर स्थित कीले तथा सागरी कीले हमे मिलते हैं, जिन्होंने अपने समय में प्रशासन में, सुरक्षा में अपने इलाके के सौंदर्य को बढाने में बहुत बडा योगदान दिया है। अपने समय के राज्य तथा अपने राजा के योगदान को उन्हांने सदियों तक लोगो के मन मे जिंदा रखा है। उनका गौरव बढ़ाया है। ये कीले कल अपने समय में भी महत्त्वपूर्ण थे आज भी है और आनेवाले कल में भी इनका महत्त्व हमेशा रहेगाा। साथ ही शिवाजी महााज का उन्हे बनाने में योगदान महत्त्वपूर्ण है, यह भी माना जायेगा।

आधारभूत संदर्भ ग्रंथ सूची :

१) Maratha Administration in the 18th century, T.T. Mahajan, Common wealth Publication, 1990, p.79-80.
२) मराठी सत्तेचा उदय, लेखक डॉ. जयसिंगराव पवार, जमदास कंपनी, मुंबई, पृ.८५.
३) यादव कालीन महाराष्ट्र, लेखक पानसे मु.ग., मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय, मुंबई - १९६३, पृ. ५७.
४) महाराष्ट्रातील धारातिर्थ, लेखक पंडित महादेव जोशी, सिंहगड का इतिहास इस प्रकरण से, पृ.८२.
५) शिवाजी व शिवकाल, सर जादूनाथ सरकार, शिवाजी का किल्ला प्रशासन, पृ.८९-९१.
६) जिल्हे रायगडची जीवन कथा लेखक श्री. शा.वि. आवळसकर, महा. राज्य साहित्यव संस्कृतीत मंडळ, १९६२, पृ. ४ ते ८.
७) मराठी सत्तेचा उदय, डॉ. जयसिंगपुराव पवार, जयदास कंपनी, मुंबई, पृ.१४४-१४५.
८) प्रतापगडचे युद्ध लेखक ग.ब. मोडक, पृष्ठ ४९ ते ५६.
९) मराठ्यांचा प्रशासकीय, सामाजिक व आर्थिक इतिहास, लेखक प्रा.बी.एस सावंत, प्रा. जाधव, पृ. १४१.
१०) मराठी सत्तेचा उदय, लेखक डॉ. जयसिंगराव पवार, पृ.३३०-३३१.
११) मिलीटरी सिस्टीम ऑफ मराठा, लेखक सुरेंद्रनाथ सेन, पृ.१६३-१६५.
१२) मराठा प्रभुत्व, खंड १ ला, बी.एल लुनिया, पृ.७३-७४.
१३) महाराष्ट्रातील धारातिर्थ, लेखक पंडित महादेव जोशी किल्ले बिजयदुर्ग इस प्रकरण से पृ. ९३-९४
१४) कृष्णाजी अनंत सभासद विरचित, शिवछत्रपतीचे चरित्र, संपादक हेरवाडकर, पृ.३९.
१५) श्री. शिवछत्रपतीचे सप्त प्ररकरणात्मक चरित्र मल्हार रामराव चिटणीस सं.र.वि. हेखाडकर, व्हिनस प्रकाशन, पुणे, २००२, पृ. १०५.